भारतीय चेतना का आंदोलन

अगस्त क्रांति

प्रभात कुमार राय

मैं तो एक ही चीज लेने जा रहा हूं-आजादी! नहीं देना है, तो कत्ल कर दो। आपको एक ही मंत्र देता हूं, करेंगे या मरेंगे। आजादी डरपोकों के लिए नहीं है। जिनमें कुछ कर गुजरने की ताकत है, वही जिंदा रहते हैं। 8 अगस्त 1942 की रात्रि को कांग्रेस महासमिति के समक्ष भारत छोड़ो आंदोलन के प्रस्ताव पर बोलते हुए महात्मा गांधी ने उपरोक्त शब्द कहे। ये शब्द इतिहास के अहम दस्तावेज बन गए। गांधी इस अवसर पर हिंदी और अंग्रेजी में तकरीबन तीन घंटे तक बोले। महात्मा की तकरीर के पूरे समय तक अजब सन्नाटा छाया रहा। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उनका एक एक शब्द देश की मर्मान्तक चेतना को झिंझोड़ता रहा और उसे उद्वेलित करता रहा।

सन् 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और इसके नेता महात्मा गांधी के संघर्ष का एक ऐसा क्रांतिकारी काल रहा, जिसमें अंग्रेजी राज के विरुद्ध भारत के जनमानस को निर्णायक संग्राम के लिए ललकारा गया। महात्मा गांधी की ललकार पर लाखों भारतवासी करो या मरो के मंत्र पर अपने जीवन को जंग ए आजादी के लिए बलिदान करने के लिए अपने घरों से निकल पड़े। भारत छोड़ो आंदोलन के इन बलिदानियों में सबसे अधिक संख्या नौजवानों की थी। गांधी की सबसे महान कामयाबी यह रही कि उन्होंने कांग्रेस के आंदोलन को केवल पढ़े लिखे लोगों के सीमित दायरे से बाहर निकाल कर भारत के विशाल जनमानस से जोड़ दिया। गांव देहात के करोड़ों किसान मजदूरों को झकझोरा और उनकी चेतना को आजादी की लड़ाई से जोड़ दिया। यही कारण है कि इस आंदोलन में सक्रिय तौर पर भागीदारी करने वालों में ग्रामीण इलाकों के सत्तर फीसदी से अधिक लोग रहे। आजादी के आंदोलन के इतिहास में 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन सबसे अधिक ताकतवर परिणामकारी अध्याय है।

दूसरे महायुद्ध का आगाज होने के बाद पराधीन भारत को ब्रिटिश सरकार ने स्वतः ही युद्ध में घसीट लिया। कांग्रेस के नेताओं ने भारत को पूर्णतः आजाद कर देने के लिए ब्रिटेन के तत्कालीन प्रधानमंत्री चर्चिल तथा ब्रिटिश हुकूमत से गुजारिश की। कांग्रेस की पुकार को ब्रिटिश शासकों ने एकदम अनसुना कर दिया। खानापूर्ति के तौर पर क्रिप्स मिशन को भारत भेज दिया जिसने महायुद्ध की समाप्ति के पश्चात भारत को आजादी देने की बात पेश की। इस पेशकश को कांग्रेस ने एकदम खारिज कर दिया। महात्मा गांधी ने साफ साफ शब्दों में क्रिप्स महोदय से कहा कि 'जब आपके पास बस इतनी सी बात है, तो अच्छा है कि जो सबसे पहला हवाई जहाज आपको मिले आप उससे ही लंदन वापस लौट जाएं।

मुम्बई में कांग्रेस कार्यसमिति की एक बैठक 7 अगस्त 1942 को आयोजित की गई। 8 अगस्त सन् 1942 को भारत छोड़ो आंदोलन का प्रस्ताव पंडित जवाहरलाल नेहरू ने रखा जिसे कांग्रेस कार्यसमिति द्वारा सर्वसम्मति से पारित कर दिया गया। प्रस्ताव पारित होने के पश्चात उसी रात महात्मा गांधी सहित कांग्रेस सभी वरिष्ठ नेताओं को ब्रिटिश पुलिस ने बाकायदा गिरफ्तार कर लिया। 9 अगस्त को आंदोलन की कमान कांग्रेस के कनिष्ठ नेताओं ने संभाल ली। देशवासियों ने व्यापक पैमाने पर आंदोलन में सक्रिय हिस्सेदारी की। अरुणा आसफअली, अच्युत पटवर्धन, जयप्रकाश नारायण, राममनोहर लोहिया, उषा मेहता, एके गोपालन, यूसुफ मेहर अली सरीखे कांग्रेस नेता उभरे और एक ऐसा विलक्षण संग्राम हुआ कि ब्रिटिश राज की नींव हिल गई।

पटना के नौजवान विद्यार्थियों ने तो बलिदान का स्वर्णिम इतिहास ही रच डाला। पटना सेक्रेटेरिएट के समक्ष नौजवानों का एक जुलूस पहुंचा, सभी अपनी जान की बाजी लगाने के लिए उद्यत थे। ब्रिटिश पुलिस अफसर आर्चर अपने दस्ते के साथ वहां मौजूद था। ब्रिटिश सेक्रेटेरिएट पर तिरंगा फहराने का प्रयास करते हुए एक के बाद एक ग्यारह नौजवानों को आर्चर के पुलिस दस्ते ने अपनी गोलियों का निशाना बना डाला जिनमें से सात ने वहीं दम तोड़ दिया था। आखिरकार एक नौजवान सेक्रेटेरिएट पर तिरंगा झंडा फहराने में कामयाब सिद्ध हुआ। अंत में गोली का निशाना बना दिया।

सन् 1942 में देश में आजादी के लिए एक नई चेतना का उदय हो हुआ जिसका पूरा श्रेय महात्मा गांधी और कांग्रेस को दिया जाना चाहिए। गांधी का स्पष्ट मत था कि अंग्रेजों को भारत की धरती पर एक मिनट के लिए भी बने रहने का कोई हक नहीं है। उन्हीं दिनों अमेरिका के प्रख्यात पत्रकार लुई फिशर भारत आए और जून 1942 में गांधी जी के साथ सेवाग्राम में रहे। लुई फिशर ने बड़ी ईमानदारी के साथ 1942 की घटनाओं का विश्लेषण किया। सन् 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में करो या मरो का नारा लगाते हुए दस हजार से अधिक भारतवासी शहीद हुए। एक लाख से अधिक आंदोलनकारी ब्रिटिश पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिए गए। कांग्रेस को गैरकानूनी संस्था करार दे दिया गया। भारत के गांव गांव में यह आंदोलन फैल गया था। जबरदस्त ब्रिटिश दमन के कारण आंदोलन स्वाभाविक रूप से हिंसक हो उठा था। आंदोलनकारियों ने रेल पटरियां उखाड़ फेंकीं, टेलीफोन व डाकखानों को ध्वस्त कर डाला। समूचे देश में शासकीय संपत्ति को भारी नुकसान पहुंचाया। सन् 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन भारत इतिहास में अगस्त क्रांति के नाम से भी जाना जाता रहा। भारतीय जनमानस की विशाल पैमाने पर भागीदारी के कारण यह आंदोलन वस्तुतः क्रांति में ही तब्दील हो गया। अगस्त क्रांति के शहीदों के बलिदान व्यर्थ नहीं गए। आंदोलन अपने मकसद को हासिल करने में कारगर सिद्ध हुआ। दूसरे महायुद्ध के बाद अंग्रेजी हुकूमत ने भारत से अपना बोरिया बिस्तर समेट लेना ही बेहतर समझा।